मध्यप्रदेश में
अब कोई नहीं पूछता ग़रीब की जात

गरीबी - दुख और अभावों की जननी है। स्त्री हों या पुरुष, बचपन, जवानी हो या बुढ़ापा गरीबी हर व्यक्ति और उम्र को तकलीफ देती है। दुखियों के दर्द को समझने और उनके जीवन में खुशियों के रंग भरने के लिए सार्थक पहल करने वाला ही सच्चा हमदर्द होता है।

मध्यप्रदेश सरकार का विश्वास है कि इस वर्ग का आर्थिक और सामाजिक उत्थान शिक्षा के जरिये आने वाली जागरूकता से ही संभव है। आज इस दिशा में किए गए प्रयासों का परिणाम भले ही कुछ समय बाद परिलक्षित हो किन्तु शिक्षा के प्रति पैदा हुई रुचि और ललक ही इनके उत्थान में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकती है।

गरीबों के जीवन में खुशहाली के लिए सरकार की पुरजोर कोशिश उसकी व्यवहारकुशल योजनाएँ हैं, जिनसे इन्हें कदम-कदम पर मदद मिल रही है। आज लाड़ली लक्ष्मी योजना, मुख्यमंत्री कन्यादान योजना, मुख्यमंत्री मजदूर सुरक्षा योजना, मुख्यमंत्री अन्नपूर्णा योजना, ऊषा किरण योजना, जननी सुरक्षा और मुख्यमंत्री आश्रय जैसी योजनाओं के क्रियान्वयन से इसबात की तसल्ली होती है कि बिना किसी जातिगत भेदभाव के मध्यप्रदेश सरकार निर्धन वर्ग के सभी गरीबों की खुशहाली के लिए निरंतर कार्य कर रही है।

जात न पूछो गरीब की
पूछो बाको दर्द।
जो इनके हित साध दे
वो सच्चा हमदर्द।।
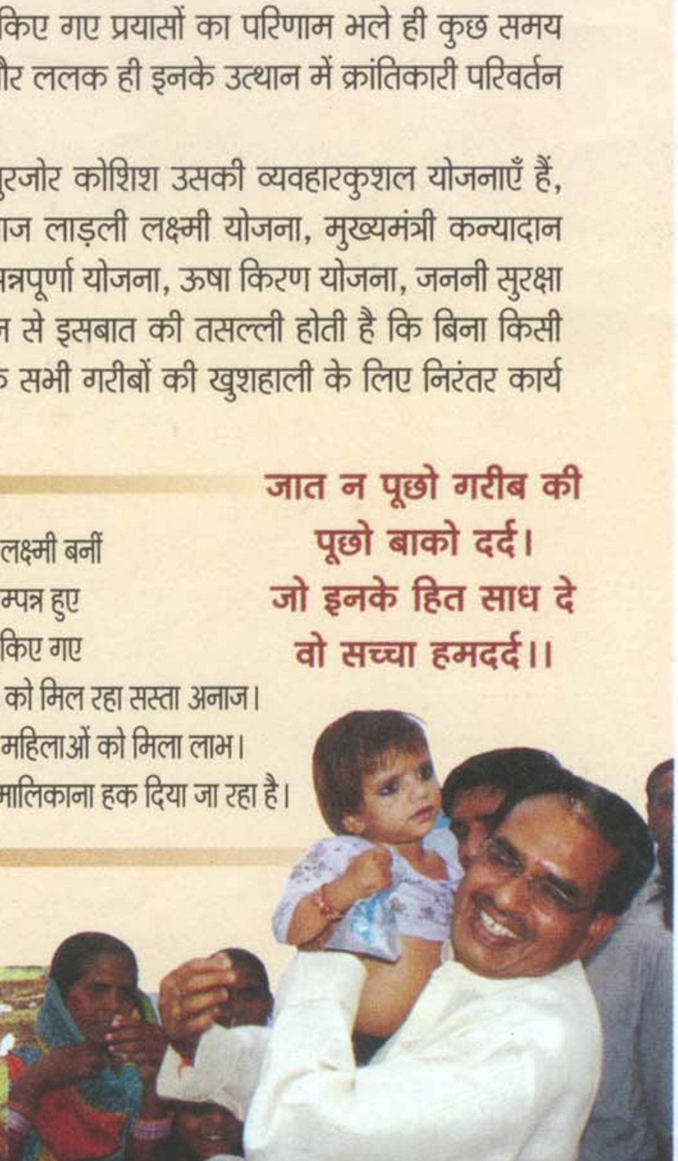
लाड़ली लक्ष्मी योजना	में 60 हजार से अधिक लाड़ली लक्ष्मी बनीं
मुख्यमंत्री कन्यादान योजना	में 60 हजार से अधिक विवाह सम्पन्न हुए
मुख्यमंत्री मजदूर सुरक्षा योजना	में 12 लाख से अधिक पंजीयन किए गए
मुख्यमंत्री अन्नपूर्णा योजना	में 2 करोड़ से अधिक नागरिकों को मिल रहा सस्ता अनाज।
जननी सुरक्षा योजना	में 16 लाख से अधिक गर्भवती महिलाओं को मिला लाभ।
मुख्यमंत्री आश्रय योजना	में 60 हजार झुग्गीवासियों को मालिकाना हक दिया जा रहा है।